

12 hrs

CALLING ATTENTION TO MATTER
OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

REPORTED MISSING OF THE SHIP
"SONAVATI" DUE TO CYCLONE AND STEPS
TAKEN BY GOVERNMENT IN REGARD
THERETO

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur):
I call the attention of the Minister
of Shipping and Transport to the
following matter of urgent public
importance and request that he may
make a statement thereon:

"The reported missing of the ship
'Sonavati' of the Scindia Steam
Navigation Company Ltd. due
to cyclone and steps taken by
the Government in this re-
gard."

**नौवहन और परिवहन मंत्री (श्री
कमलापति त्रिपाठी):** मुझे सदन को बंगाल
की खाड़ी में हुई समुद्री दुर्घटना की सूचना
देने के बारे में खेद है। मामले के तथ्य निम्न
प्रकार हैं:—

मोटर वैमल 'सोनावती' जो 1960
में बना था (जी० आर० टी० 1999 तथा
डी० डब्लू० टी 3105) सिंधिया स्टीम
नेवीगेशन कम्पनी का है। यह जहाज,
जिसमें नमक था और 38 कार्मिक थे,
तुतीकोरिन से कलकत्ता को जा रहा था और
8 दिसम्बर, 1973 को विशाखापत्तनम् के
लगभग 256 कि० मी० दक्षिण पूर्व में एक
स्थान पर बंगाल की खाड़ी में एक समुद्री
तूफान में घिर गया। जहाज ने एक "संकट
संदेश" (एस० ओ० एस०) भेजा जो सिंधिया
स्टीम नेवीगेशन कम्पनी के एक अन्य जहाज
"जलमोती" ने ग्रहण किया और आगे कलकत्ता
रेडियों को भेज दिया। इस संदेश के अनुसार,
8-12-1973 को लगभग दिन के 2 बजे
कार्मिकों ने जहाज छोड़ दिया। जहाज
उसो दिन, दिन के 2.40 पर डूब गया।

संदेश प्राप्त होने पर, जल परिवहन विभाग
कलकत्ता के प्रधान अधिकारी ने भारतीय
वायुसेना स्टेशन, बरकपुर तथा ईस्टर्न
नेवल कमांड, विशाखापत्तनम और जल
परिवहन विभाग, मद्रास के प्रधान अधिकारी
को तुरन्त सतर्क कर दिया। इस समय, बचाव
कार्य में चार जहाज लगे हुए हैं, जिनमें से 3
भारतीय हैं और एक विदेशी है। भारतीय
जहाज "जलमोती" और "जल जवाहर"
सिंधिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी के हैं तथा
"देवराज जयंती" शिपिंग कारपोरेशन आफ
इंडिया का है और "एंपिलोसिस" जहाज ग्रीक
शिपिंग कम्पनी का है।

ताजे समाचारों के अनुसार इस अभागे
जहाज के अभी तक 28 कार्मिक बचा लिये
गये हैं, 4 की मृत्यु हो गई है और 6 लापता
है।

प्रधान अधिकारी, जल परिवहन विभाग,
मद्रास ने इस समुद्री दुर्घटना की प्रारम्भिक
जांच शुरू कर दी है।

श्री एस० एम० बनर्जी : अध्यक्ष महोदय,
मंत्री जी ने बताया है कि 8 दिसम्बर, 1973
को बंगाल की खाड़ी में विशाखापत्तनम् से
लगभग 256 किलोमीटर यह जहाज
तूफान से घिर गया, उस ने एस० ओ० एस०
भी भेजा जिस को कलकत्ता रेडियो द्वारा
प्रसारित किया गया। उन्होंने यह भी बताया
कि उसी दिन 2 बजे जो कर्मचारी उस जहाज
में काम कर रहे थे उन्होंने उस जहाज को छोड़
दिया और 2 बजकर 40 मिनट पर वह
जहाज डूब गया। मैं मंत्री महोदय से पूछना
चाहता हूँ—क्या यह मुमकिन नहीं था कि
इस तूफान के आने की सूचना उस जहाज के
कर्मचारियों को पहले से दी जा सकती थी।
यदि दी जा सकती थी, तो क्या इस जहाज
में ऐसी सूचना प्राप्त करने का कोई यंत्र
लगा हुआ था या नहीं? यदि था, तो क्या

[श्री एस० एम० बनर्जी]

वह काम नहीं कर रहा था, यदि कर रहा था तो उन को वह सूचना पहले क्यों नहीं दी गई ?

इस सूचना के प्राप्त होने पर दूसरे जहाजों ने उन को बचाने की कोशिश की—यह खुशी की बात है। 28 व्यक्ति बचा लिए गए, लेकिन 10 व्यक्तियों की जान चली गई। 4 के शव मिले हैं और 6 के लिए मिसिंग शब्द का इस्तेमाल किया जा रहा है। मैं तो यह भ्रामा करता हूँ कि वे भी जीवित हों तो अच्छा है।

मचेंट सिफिंग एकट के अन्तर्गत जो एन्क्वायरी हो रही है, उस के संबंध में मैं जानना चाहता हूँ कि एन्क्वायरी करने वाले अफसर कौन हैं, क्या वे वही व्यक्ति होंगे जो जहाजरानी में हिंसा ले रहे हैं या इस की कोई निष्पक्ष जांच होगी ?

इस दुर्घटना में जिन व्यक्तियों की मृत्यु हो गई है—उन के परिवारों को कोई कम्पन्सेशन मिलेगा या नहीं ? यदि मिलेगा तो अन्तरिम महायता का रूप में कितना कम्पन्सेशन उन्हें दिया गया है और आइन्दा कितना दिया जायेगा ?

यह प्राइवेट कम्पनी जो जहाजरानी का काम कर रही है, इस ने कभी भी जहाजों की देखभाल अच्छी तरह से नहीं की है—इस से मालूम होता है कि अब समय आ चुका है कि सरकार नेशनल सिफिंग बोर्ड के अन्तर्गत इस कम्पनी को भी अपने हाथ में ले । क्या सरकार इस कम्पनी को अपने हाथ में लेने जा रही है, यदि नहीं, तो उसके कारण क्या हैं ?

अध्यक्ष महोदय : मैंने 4 सवाल पूछे हैं—इस जहाज को तूफान की सूचना पहले से देने की जरूरत थी, क्या ऐसा सम्भव था कि यह सूचना उन को पहले से मिल जाती, यदि नहीं मिली तो क्यों ? दूसरा—एन्क्वायरी

कमीशन के चेयरमैन कौन है ? क्या कोई निष्पक्ष व्यक्ति होंगे या इस सिफिंग कम्पनी के कुछ अफसरान होंगे, चाहे वे टैकनिकल हों या नान-टैकनिकल हों—उन को यह काम सौंपा जायेगा ? तीसरी—जिन व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी है उन के परिवारों को कितना मुआवजा दिया जा चुका है और आगे कितना मुआवजा मिलेगा ? चौथा—इस सिफिंग कम्पनी को सरकार अपने हाथ में लेने के लिए तैयार है या नहीं ?

श्री कमलापति त्रिपाठी : कोई भी दुर्घटना हो जाये, जिसमें लोगों के प्राण चले जाये—यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। यह दुर्घटना हो गई और इस में 4 आदमी मारे गए और 6 का पता नहीं है। हम सब यही उम्मीद करें कि वे 6 जीवित होंगे तो यह अच्छी ही बात है, लेकिन सम्भवतः उन के भी प्राण चले गए होंगे। जहां तक सूचना देने की बात है—यह मैट्रोलोजिकल डिपार्टमेंट की जिम्मेदारी है और वे रोज इस की सूचना पोर्ट्स को जहाजों को दिया करते हैं...

श्री एस० एम० बनर्जी : मैं मंत्री जी को बतला देना चाहता हूँ—उन्होंने जब भी कहा है कि वारिख होगी, वारिख कभी नहीं हुई, आप उन पर डिरेक्ट करें।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (स्व.लि.पर) : यदि उन्होंने घोषणा कर दी कि आग वारिख होगी, तो लोग छत्ते नहीं ले जाते।

श्री कमलापती त्रिपाठी : आज फल तो ज्योतिष की बात भी झूठी निकल रही है। मैट्रोलोजिकल डिपार्टमेंट भी बैठा ही है लेकिन उनका काम यह है, उाकी यह जिम्मेदारी है कि वे इसकी सूचना दे दें और

प्रति दिन यह सूचना दी जाती है। जहां तक इस मामले की सूचना पहुंची या नहीं, यह मानकर चलना होगा कि जांच हो रही है उससे यह बात स्पष्ट हो जायेगी। मरुन्टाइन मेरीन डिपार्टमेंट के जो प्रिन्सिपल आफिसर हैं वे प्रिन्सिपलरी इन्क्वायरी कर रहे हैं। उनकी प्रिन्सिपलरी रिपोर्ट आ जाये तभी बांने ठीक तरह से स्पष्ट हो सकती है। उनकी रिपोर्ट जल्दी आ जायेगी क्योंकि उन्होंने इन्क्वायरी शुरू कर दी है। यह इन्क्वायरी कानून के मुताबिक शुरू की गई है। जैसा कि माननीय सदस्य ने कहा, जो ऐक्ट है मरुन्टाइन मेरीन ऐक्ट उसके मुताबिक इन्क्वायरी शुरू की है, उनकी रिपोर्ट आ जाये तो फिर कोर्ट की भी इन्क्वायरी होगी। कोर्ट भी बैठती है कानून के मुताबिक और उसमें सारा मामला पेश किया जायेगा।

जहां तक कम्पेंसेशन की बात है, कम्पेंसेशन भी कानून के मुताबिक दिया जाता है। जो मेरे पास सूचना है उसके हिसाब से उन्हें कम्पेंसेशन यूनुग्रल स्केन के मुताबिक दिया जायेगा। सीमें को 11 हजार से 15 हजार का कम्पेंसेशन नेशनल मेरिटाइम बोर्ड के एग्जीमेंट के मुताबिक दिया जायेगा। जो नान-सर्टिफिकेटेड आफिसर हैं उन्हें 40 महीने का बेज दिया जाता है अगर आफिसर की अवस्था 30 वर्ष से कम है और अगर 30 वर्ष से ज्यादा अवस्था है तो 35 महीने का बेज दिया जाता है। सर्टिफिकेटेड आफिसर जो होते हैं उन्हें 48 महीने का बेज दिया जाता है अगर 30 वर्ष से कम की उम्र है और 42 महीने की तनख्वाह दी जाती है अगर 30 वर्ष से ज्यादा की उम्र हो। तो यह कम्पेंसेशन का रूल है और इसके हिसाब से कम्पेंसेशन दिया जायेगा।

यह शिपिंग कम्पनी और जितना प्राइवेट सेक्टर है उसको ले लिया जाये या नहीं, यह गवर्नमेंट की पालिसी से सम्बन्ध रखना

है। किमी चीज का नेशनलाईजेशन तब करते हैं जब उसमें लाभ दिखाई देता है। नेशनलाईजेशन स्वयं कोई लक्ष्य नहीं है बल्कि वह एक साधन है किसी साध्य को पूरा करने के लिए यदि कोई लाभ दिखाई दे तो नेशनलाईजेशन पर विचार किया जाये और यदि कोई लाभ न हो तो नेशनलाईजेशन करना जरूरी नहीं है। तो अभी नेशनलाईजेशन का मामला हमारे सामने नहीं है।

SHRI S. M. BANERJEE: You have heard that the compensation is only Rs. 11,000 in some cases. In the Indian Airlines it is Rs. 1,00,000 and in the railways it is Rs. 50,000. I would request you to ask the Minister to take steps to see that the Act is amended.

MR. SPEAKER: He has had his chance.

श्री नवल किशोर : शर्मा (दोसा) : सोनावती जहाज की दुर्घटना के संबंध में दिए गए वक्तव्य से ऐसा प्रतीत होता है ता जहाज के कार्मिकों को बचाने में काफी तत्परता से काम लिया गया फिर भी चार व्यक्ति मारे गए और 6 का पता अभी नहीं चल सका है। उनके बारे में बहुत कुछ आशंका है कि सम्भवतः वे मर गए हैं। इस दुर्घटना को रोकने के बारे में कुछ प्रयत्न किया जा सकता था या नहीं यह तो जांच कमीशन से पता चलेगा लेकिन फिर भी मैं मंत्री महोदय से उनके वक्तव्य के आधार पर यह पूछना चाहता हूँ, उन्होंने कहा है कि तूफान के आने की सूचना उनको मेट्रोलाजिकल डिपार्टमेंट के द्वारा मिलती है तो क्या यह सम्भव नहीं है क्योंकि विज्ञान और टैक्नोलॉजी का जो विस्तार हुआ है, दूसरे मुकों में जो हालात हैं उसके आधार पर क्या जहाजों में ऐसे उपकरण लगाना सम्भव नहीं है जिससे पूर्व पता चल

[श्री नवल किशोर शर्मा:]

सके किसी होने वाली दुर्घटना का या आने वाले तूफान का अथवा पोर्टस पर अपनी तरफ से कोई व्यवस्था नहीं की जा सकती जिसके द्वारा इस तरह की पूर्व सूचना मिल सके और वह पूर्व सूचना उन जहाजों को दी जा सके जिससे समय रहते वे अपनी रक्षा का प्रबंध कर सक ? क्या इस विषय में उन्होंने कोई जानकारी दी है और क्या ऐसा करना हिन्दुस्तान में सम्भव नहीं है ?

दूसरे अभी मंत्री जी ने जो आकड़े बताये कम्पेन्सेशन के उन्नत रूल्स के मुताबिक 11 हजार या 30 महीने की तनख्वाह या 40 महीने की तनख्वाह सर्विस के आधार पर मिलेगी तो यह तो रूल्स हैं वह कब बने थे और इन रूल्स के बारे में आज के मौजूदा हालत में क्या पुनर्विचार करने का उनका इरादा नहीं है ? जैसा कि अभी मेरे मित्र बनर्जी साहब कह रहे थे कि हवाई जहाज के यात्रियों के लिए एक लाख रुपये का कम्पेन्सेशन और रेल यात्रियों के लिए 50 हजार का कम्पेन्सेशन देने की व्यवस्था की गई है तो यह कामिक जो कि रात दिन काम करते हैं, प्राणों से जूझते हैं उनके लिए इतना थोड़ा कम्पेन्सेशन पुनर्विचार के योग्य नहीं है क्या ? इस के साथ-साथ मैं यह आश्वासन भी मंत्री जी से चाहूंगा कि अगर वे इन कामिकों का कम्पेन्सेशन बढ़ाने की स्थिति में नहीं है तो क्या वे उनके डिपेन्डेंट्स को जहाज में या किसी दूसरी जगह स्थान देने पर सहा-नमतिपूर्वक विचार करेंगे ?

श्री कमलापति त्रिपाठी : मान्यवर, माननीय सदस्य ने जो कुछ कहा है मैं बहुत कुछ उससे सहमत हूँ। यह बात ठीक है कि अजकल विज्ञान की बड़ी उन्नति हो गई है। और कोई कारण नहीं है कि तूफानों की सूचना सतर्क करने की दृष्टि से आरम्भ में न दे

दी जाए। मैं समझता हूँ कि कुछ इसका प्रबन्ध है। पोर्टस पर इसका प्रबन्ध है और वह सूचना दी जाती है। जहाजों पर भी उसका प्रबन्ध होगा उसका मुझे ठीक पता नहीं है लेकिन अगर नहीं है तो उसको हम देखेंगे कि जहाजों पर भी उसका कोई प्रबन्ध हो। पोर्टस पर सूचना मिले न मिले लेकिन जहाज पर जो लोग हो उन्हें सूचना मिल जाए और तूफान आने की आशंका का उन्हें पता लग जाये। जहां तक मुझे मालूम है जब उड़ीसा में तूफान आया था तो उस समय एक कमेटी बनी थी जो इस बात को देखेगी कि समुद्र में जो हों उनको भी तूफानों की सूचना दी जा सकती है या नहीं, मुझे अभी असुवर नहीं मिला है कि उस कमेटी की रिपोर्ट को देख सकूँ, पता नहीं वह आ गई है या नहीं लेकिन जैसा आपने सुझाव दिया है उसा पर हम जरूर ध्यान देंगे और भविष्य में इसका प्रबन्ध करने की कोशिश की जाएगी।

जहां तक कम्पेन्सेशन की बात है, यह तो नेशनल मेरीटाइम बोर्ड है उससे एग्जीमेन्ट हुआ था या उसके मुताबिक यह कम्पेन्सेशन मंजूर किया गया। लेकिन मैं समझता हूँ कि यह जो मुआविजा दिया जा रहा है या दिया जाता है उसको भी देखने की जरूरत है क्योंकि समुद्र में जो लोग रहते हैं वे ज्यादा खतरे में रहते हैं कम खतरे में नहीं रहते हैं इसलिए इस विषय में भी विचार करने का जो सुझाव है उस पर भी विचार किया जाएगा ?

जहां तक उनके सम्बन्धियों को काम देने की बात है, मैं समझता हूँ कि यह सुझाव भी अच्छा है और इसके लिए मैं जरूर प्रयास करेगा। अगर उनके पास सम्बन्धी हैं जिनके कि प्राण चले गए हैं तो उनके आश्रितों को कोई न कोई स्थान दिया जाए इस पर भी विचार किया जाएगा।

श्री शिरेन्द्र सिंह राव (मन्हेदगढ़):
अध्यक्ष महोदय, यह निहायत अफसोस की बात है कि पंडित जी ने जैसे ही जहाजरानी मुहकमे को सम्भाला उसके फौरन बाद ही जहाजों का बेंड़ा गर्क होना शुरू हो गया। वे एक धार्मिक व्यक्ति है, अच्छे विचारों के हैं और इन्होंने महरत जरूर निकलवाया होगा लेकिन हो सकता है कि राज बहदुर जी की बददुआओं का असर भ्राना शुरू हो गया हो। . . . (व्यवधान) . . .
जहाजरानी का सुपरस्टीशन से श्वास ताल्लुक है, इस लिए मैं ने यह अज्ञ किया है।

मंत्री महोदय ने अपने बयान में फरमाया है कि इस जहाज का जी० आर० टी० 2,000 टन से नीचे था और डी० डब्ल्यू० टी० 3106 टन था। क्या वह बतायेंगे कि ऐसा तो नहीं है कि इस जहाज पर उस की कैपेसिटी से बहुत ज्यादा माल लादा गया हो ?

मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि इस जहाज के कप्तान को कितने दिन से कप्तानी का सर्टिफिकेट मिला हुआ था और ऐसे समुन्दरी जहाजों के कप्तानों को लाइसेंस देने के लिए जांच करने का और फिटनेस मालूम करने का गवर्नमेंट का क्या तरीका है। मंत्री महोदय यह भी बतायें कि क्या यह हल्का जहाज था और अपने चार्टर्ड रूट पर चल रहा था, क्योंकि बंगाल की खाड़ी तूफानों के लिए मशहूर है और इतने हल्के जहाज का बीच समुन्दर में, साहिल से बहुत दूर, चलना कुदरती तौर पर बहुत खतरनाक है।

सरकार के पास इस बात की क्या व्यवस्था है कि कुछ घण्टों के बाद जहाजों की सी-वर्दीनेम का सर्टिफिकेट हासिल करना पड़े ? यह जो जहाज डूबा है, उस को सी-वर्दीनेस का पिछला सर्टिफिकेट कब मिला था ?

मंत्री महोदय ने अपने बयान में बताया है कि 28 आदमी रेसक्य पर लिये गये, चार लाखें

वरा मंद हुई और छः आदमी मिसिंग हैं, जिन की तलाश जारी है। उन्होंने हाउस में यह बयान पढ़ने से पहले यह फ्रिका काट दिया कि छः मिसिंग आदमियों की तलाश जारी है। क्या इसका यह मतलब है कि उन छः आदमियों की तलाश छोड़ दी गई है और अगर छोड़ दी गई है, तो क्यों ? पहले यह खबर आई थी कि ऐसा शुबहा किया जाता है कि वे भी नजदीक की समुन्दर में हैं। उन्होंने किस तरह यह तमल्ली कर ली कि अब आगे उन को ढूँढने की जरूरत नहीं है ? गवर्नमेंट के पास हवाई जहाज और हेलिकाप्टर वगैरह बहुत साधन हैं। क्या इस बात का खतरा नहीं है कि कहीं वे बेचारे तड़प तड़प कर समुन्दर में मर जायें ?

यह बात भी समझ में नहीं आ रही है कि इस जहाज ने जो एस० ओ० एस० सिग्नल दिया, वह कलकत्ता में रिसीव हुआ, जब कि नजदीकतरी जगह विशाखापत्तनम् थी। वहां ईस्ट्रन नैवल कमांड का हैडक्वार्टर है। इस के साथ ही मर्कन्टाइल मरिन डिपार्टमेंट का प्रिंसिपल आफिसर भी नजदीक ही मद्रास में है। विशाखापत्तनम् एक बहुत बड़ा पोर्ट है। नेवी के पास अपने जहाज, हेलिकाप्टर और हवाई जहाज होते हैं। क्यों नहीं सब बड़े बड़े बन्दरगाहों पर ऐसा कोई बन्दोबस्त किया जाता कि नजदीकतरी जगह पर एस० ओ०एस० रिसीव किया जाये ? और फौरन उस जहाज के रेस्क्यू के लिए बन्दोबस्त किया जाए क्या इसमें सरकार की, या सरकार के मर्कन्टाइल डिपार्टमेंट की, कोताही नहीं है कि जहाज विशाखापत्तनम के नजदीक डूब रहा है, लेकिन उसका एस० ओ० एस० नजदीक नहीं, बल्कि कलकत्ता में रिसीव होता है और वहां से रिले करके विशाखापत्तनम् से कार्यवाही की जाती है ?

श्री कबलापति त्रिपाठी : श्रीमान : माननीय सदस्य ने बड़े अच्छे सवाल उठाये हैं। मैं तो समझता हूँ कि मैं धार्मिक आदमी

[श्री बीरेन्द्र सिंह राव]

हूँ? इस लिए 28 आदमी बच गए। लेकिन कहीं अगर यह विभाग राव साहब के हाथ में रहता, तो एक भी न बचता। मुझे बड़ा अफसोस है कि वह महकमा लेने के बाद यह दुर्घटना हुई और इस के लिए मैं खेद प्रकट कर चुका हूँ। जहाँ तक बेड़ा गर्क करने की बात है, मैं इस चेष्टा में लगा हूँ कि मैं माननीय राव साहब का बेड़ा बाहर निकाल दूँ, जो गर्क हो चुका है।

मैं ने अपने वक्तव्य में एक लाइन इस लिए निकाल दी है, क्यों कि मेरे पास आज सूचना आई है कि जब तीन चार दिन तक पूरी कोशिश करने के बाद भी उन लोगों का पता नहीं लगा, तो यह समझा गया कि और पता लगाने की चेष्टा करना बेकार होगा और जलमोती तथा अन्य तीन चार जहाज, जो उन की खोज कर रहे थे, लौट आये। मैं इस बात की एनक्वारी करूँगा कि वे कैसे इस नतीजे पर पहुँचे कि उन की लाश भी नहीं मिल सकती अगर उन बेचारों के प्राण चले गए, तो कम से कम लाशें तो मिल जाए।

जहाँ तक संकट संदेश का प्रश्न है, सिंधिया नेवीगेशन कम्पनी का एक जहाज, जलमोती, कहीं घास-पास था, पहले उसने उस संदेश को पकड़ा और उसने उस को कलकता रिले कर दिया। लेकिन विशाखापत्तनम भी 260 किलोमीटर दूर था। मकॅन्टाइल मैरिन डिपार्टमेंट के प्रिंसिपल आफिसर इन सब बातों की इनक्वारी कर रहे हैं। उस एनक्वारी की रिपोर्ट में ये सब पायट्स आयेंगे कि यह संदेश कहाँ दिया जा सकता था वह टाइम से मिला या नहीं, मोटिआरोलोजिकल डिपार्टमेंट की कोई गलती हुई है या नहीं, कहीं माल तो ज्यादा नहीं लदा था, आदि। एनक्वारी की रिपोर्ट आने पर इस सम्बन्ध में कार्यवाही की जाएगी।

जहाँ तक सी-वर्दीनेस का सम्बन्ध है, जिस दिन यह जहाज चला, उस की सी-वर्दीनेस 100 परसेंट थी। सर्टिफिकेट देने के लिए थोड़े थोड़े समय के बाद जांच हुआ करती है। दिसम्बर, 1974 में इस की एनक्वारी होनी थी?

इस बात के लिए बोर्ड भी बैठती है कि किस भर जिम्मेदार डाली जाए और कौन दंडित हो। प्रिलिमिनरी रिपोर्ट आने पर इस बारे में कार्यवाही की जाएगी?

श्री श्रीकिशन मोदी (सीकर) :

अध्यक्ष महोदय, आज के इस विज्ञान के युग में सारे जहाज यंत्रों से सुसज्जित होते हैं और इस कारण उनके ऐसे तूफानों से डूब जाने की सम्भावना कम होती है। लेकिन इस जहाज के बारे में एक खास बात है कि यह, जहाज 1960 हालैण्ड में बना था और 1968 में पुराना जहाज इस कम्पनी रस खरीदा था। मैं यह जानना चाहता हूँ कि 1968 में जब यह जहाज खरीदा गया तो क्या उस समय उस के बारे में पूरी जानकारी सरकार के पास, या उस कम्पनी के पास थी। क्या सरकार के पास आज इस बात की कोई जानकारी है कि उस जहाज में कोई खराबी तो नहीं थी और क्या वह तूफानों की सूचना देने वाले यंत्रों से महरूम तो नहीं था?

ये सारे जहाज इन्शोर्ड होते हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि पुराना जहाज किस कीमत पर खरीदा गया और वह कितनी रकम पर इन्शोर्ड था। ज्यादातर प्राइ-वेट कम्पनियों बीस हजार रुपये के माल को साठ हजार रुपये पर इन्शोर्ड कराती हैं और इस तरह उसके लिये साठ हजार रुपये देने पड़ते हैं। क्या एनक्वारी के इस समय से बात का भी ध्यान रखा जायेगा कि यह जहाज कितने रुपये में खरीदा गया, कितने रुपये पर इन्शोर्ड था और सरकार को इसके लिये

कितना रूपया देना पड़ेगा ? क्या सारा नुकसान सरकार का हुआ है ?

मैं समझता हूँ कि इसमें प्राइवेट कम्पनी का कोई नुकसान नहीं हुआ है, बल्कि सारा नुकसान सरकार का हुआ है। इस पर लदा हुआ माल इनशोर्ड था। उसका मुआवजा सरकार को देना पड़ेगा। यह अहाज न जाने कितने परसेंट ज्यादा पर इनशोर्ड था। वह इंशोरेंस का रूपया सरकार को देना पड़ेगा। और जो आदमी भर गये हैं, उनके लिये भी सरकार को कम्पेन्शन देना पड़ेगा। इस प्राइवेट कम्पनी की कितनी लायबिलिटीज हैं। उसको कितना नुकसान हुआ है ? वह कितना खमियाजा भरेगी ? इस समय हमारे यहाँ कितने प्राइवेट अहाज हैं और इनकी क्या स्थिति है ?

6 दिसम्बर को आपका आदर-सत्कार किया गया था, तो वहाँ श्री बाजपेयी ने कहा था कि हम जहाँ भी जायें, वहाँ बंटोघार हो जाता है ; हम चिली जाने वाले थे और वहाँ पर सरकार का तख्ता पलट गया। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या कहीं उस अहाज पर श्री बाजपेयी की छाया या प्रतिनिधि तो नहीं था, जिससे वह डूब गया।

मैं मंत्री महोदय को योग्यता और कुशलता की दाद देना चाहता हूँ। इस में दो रायें नहीं हैं कि उनके धार्मिक होने और उच्च विचारों का होने के नाते 28 आदमियों का बचाव हुआ है।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : अध्यक्ष महोदय। मेरे नाम का हावाला क्यों दिया जा रहा है ? इस विभाग के मंत्री पंडित कमलापति त्रिपाठी हैं। एक अहाज डूबा और कुछ लोग बचा लिये गये। लेकिन मुझे बीच में लाने की कोशिश क्यों की जा रही है ?

अध्यक्ष महोदय : इसलिये कि आप भले आदमी हैं, बहादुरी हैं।

श्री कमलापति त्रिपाठी : श्री बाजपेयी का नाम इसलिये लिया गया कि वह सदन की शोभा हैं।

माननीय सदस्य के सवालाल तो तफसील के हैं कि कितने में खरीदा गया, हालैण्ड में बना और इसके बाद 68 में उन्होंने खरीदा, कितने का खरीदा, इन्प्योर्ड है या नहीं, है, दुर्घटना से इसका कोई बहुत सीधा सम्बन्ध नहीं है। लेकिन माननीय सदस्य चाहेंगे तो मैं इन सारी बातों की जांच करके इसकी सूचना उनको दे दूंगा और यह भी जानकारी कर लूंगा कि कम्पेन्शन वगैरह सरकार को देना होगा या कम्पनी को देना होगा।

आपने यह सवाल भी किया कि कितने प्राइवेट अहाज आपके पास हैं। बहुत सी कम्पनियाँ हैं। हमारे पास तो शिपिंग कारपोरेशन आफ इण्डिया के जो अहाज हैं वह तो मैं समझता हूँ कि जितना काम हम करते हैं इसका सिर्फ 40-45 परसेंट काम करते हैं बाकी बहुत सारा काम प्राइवेट कम्पनियाँ करती हैं और कुछ बाहर की भी करती हैं। तो ये तो बहुपद विस्तार के सवाल हैं आप चाहेंगे तो आपके पास पूरी सूचना भेज देंगे। सम्प्रति इसकी जांच हो रही है और जांच की रिपोर्ट जब आ जाय तब उसके बाद फिर भविष्य की कार्यवाही की जायेगी ?

अध्यक्ष महोदय : जो सूचना आपने उन्हें बाद में भेजेंगे वह आप टेबल पर ही रख दीजियेगा ताकि दूसरे मेम्बरों को भी मालूम हो जाय।

श्री कमलापति त्रिपाठी : आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।

श्री मधु लिमये (बांका) : अध्यक्ष महोदय, बंगाल की खाड़ी का इलाका तूफान और भ्रांघी का इलाका है और इसमें लगातार अहाज डूबते चले जा रहे हैं। आपको याद

[श्री मधु लिमये]

होगा कि ढाई साल पहले या तकरीबन तीन साल हो गये, महाजगभित्तूनाम का जहाज डूब गया था और यहाँ तक कि कहां वह डूबा, उसके ऊपर जो नाविक थे उनका क्या हुआ, सरकार को पता तक नहीं चला ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : राव साहब को बता देंजिये ।

श्री मधु लिमये : राव साहब क्या करेंगे ? इसमें करना तो आप ही लोगों का है, लेकिन आप लोग अपनी जिम्मेदारी को पूरा नहीं कर रहे हैं ।

मैं यह कह रहा था कि बंगाल की खाड़ी का इलाका चूँकि तूफान का इलाका है और बंगाल की खाड़ी पर भारत के अलावा बंगला देश, बर्मा, मलाया ये देश भी बसते हैं, तो मैं आप से यह जानना चाहता हूँ कि क्या इन देशों के साथ मिल कर जहाजों को बचाने के लिये मीटिरिओलाजिकल डिपार्टमेंट नहीं, बल्कि कोई और तथा संगठन आप अपनायें और उसमें बंगला देश, मलाया तथा बर्मा की भी मदद लेंगे ।

दूसरी चीज मैं यह जानना चाहता हूँ कि इन दिनों में जो स्पेस रिसर्च चल रहा है और वेदर सटेलाइट्स वगैरह बनाये जा रहे हैं तो क्या बंगाल की खाड़ी के लिये इस तरह की सहायता और सटेलाइट्स वगैरह से या स्पेस रिसर्च सेंटर में मिल सकती है, तो उसे प्राप्त करने का सरकार ने अब तक प्रयास किया है ? अगर नहीं किया है तो मैं जिस संगठन की चर्चा कर रहा हूँ उसको खड़ा करने के काम में क्या उनकी मदद भी ली जायेगी ?

इसी सम्बन्ध में मैं एक बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि बंगाल की खाड़ी में हमारा अंशमान है, तो क्या अंशमान पर आप कोई एक ऐसा मित्रा जुला जत्या रखेंगे पानी की

समुद्र पर चलने वाले जहाज, हवाई जहाज, हेलीकोप्टर आदि जो दुर्घटना की सूचना मिलते हैं या कोई जहाज खतरे में है, इसकी सूचना मिलते हैं मदद के लिये दौड़ें ? इस तरह का कोई संगठन या जत्या आप अंशमान में जो कि हमारे भारत का ही हिस्सा है बनायेंगे ?

मंत्री महोदय इस बात का भी खुलासा करें कि क्या मीटिरिओलाजिकल सर्वे के बाद आप कोई इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि एक विशेष मौसम में ये दुर्घटनायें ज्यादातर होती हैं ? क्योंकि हम लोग देखते हैं नवम्बर से लेकर जनवरी तक, मैं तो कोई इसमें विशेषज्ञ नहीं हूँ, लेकिन मैं सरकार से जानना चाहता हूँ कि जब साल के आखिर में और साल के प्रारम्भ में बंगाल की खाड़ी में इस तरह की आंधी के समाचार प्राप्त होते हैं, तो जब यह आंधी वाला मौसम चालू हो जाय तो क्या बुद्धिमानी इसमें नहीं है कि छोटे-छोटे जहाज जो आंधियों का मुकाबिला नहीं कर सकते वह इन दिनों में बंगाल की खाड़ी में न भेजे जायें और जो बड़े जहाज हैं, आधुनिक जहाज, सारी यंत्र सामग्री से जो परिपूर्ण हैं उन्हें जो इन दो तीन महीनों के अन्दर अब खतरा ज्यादा रहता है, इन्हेभाल में लाया जाय ?

मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि महाजगमिव के बारे में आपने खोज करना छोड़ दिया, तो इस बीच में आपको कोई इस बारे में जानकारी हुई और क्या ? इन नयी दुर्घटनाओं में 6 लोग जो गायब हैं इनकी खोज का काम जारी रखें हैं उसको भी खत्म कर दिया है ?

तो बंगाल की खाड़ी में इधर दो तीन सालों में कितनी दुर्घटनायें हुई हैं क्या उनके बारे में कोई मिलीजुली जानकारी वह इकट्ठी करेंगे और उसका मुकाबिला करने की कोई मिलीजुली योजना बनायेंगे, इसके बारे में भी सदन को विश्वास में लेंगे ?

12.38 hrs.

RE. ADJOURNMENT MOTIONS

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Sir I have given notice of an Adjournment Motion. I want to make a statement. I have given notice of that also. (Interruption)

श्री कमलापति त्रिपाठी : मान्यवर. माननीय सदस्य के मुझाव बड़े अच्छे हैं। मैं अवश्य उस पर विचार करूंगा क्योंकि दुर्घटनाओं से जहाजों को बचाने के लिये या किसी का भी प्राण बचाने के लिये हमेशा ही प्रवन्ध करना चाहिये। जो कुछ भी प्रवन्ध सम्भव हो और हो सकेगा उसके विषय में कई मुझाव आये हैं हम जरूर उस पर विचार करेंगे।

जहां तक इन 6 आदमियों की खोज की बात है मैंने यह निवेदन किया कि मेरे पास आज सूचना यह आई है कि उन लोगों की खोज का काम बन्द कर दिया और श्री राव साहब को मैं जवाब दे रहा था कि मैं इस बात को देखूंगा कि क्यों खोज का काम बन्द कर दिया। अगर जिन्दा नहीं मिल सकते तो क्या यह सम्भव है कि उनके शव ही मिल जाय. यह मैं देखूंगा, इसकी जानकारी उनमें हासिल करूंगा। सम्भवतः उन्होंने यह समझ कर छोड़ दिया कि चार पांच दिन बग़बर खोज करते रहे, कुछ पता नहीं लगा सका, जो मिल सके उनको ले आये जावित या मृत और जो नहीं मिल सके उनके लिये ज्यादा परिश्रम और प्रयास करने का कदाचित कोई ज्यादा उपयोग नहीं होगा इनलिये उन्होंने छोड़ दिया होगा। फिर भी मैं उनकी जांच करूंगा।

माननीय मधु जी ने जो मुझाव दिये उन्हें मैंने नोट कर लिया है। मैं उन पर अवश्य विचार करूंगा कि कुछ किया जा सकता है तो किया जाय।

जहां तक दूसरे देशों को भिनाकर कोई संगठन खड़ा करने की बात है वह तो एक अलग बात है। बंगला देश, मलाया और चर्मा ये सब स्वतन्त्र देश हैं। इनसे कुछ बातचीत करने के बाद ही कि कैसे किया जाय, क्या हो, ये ऐसे मसले हैं कि जिन पर विचार करने के बाद ही कुछ उतर दिया जा सकता है।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी (शालियर) :

अध्यक्ष महोदय, मैंने एक कामरोको प्रस्ताव दिया है। महाराष्ट्र और मैसूर का सीमा विवाद हल करने में केन्द्र सरकार की विफलता के कारण दोनों प्रदेशों में इस समय अशांति मची हुई है। पहले बेलगांव में मराठी भाषा भाषियों पर पुलिस ने ज्यादतियां की। अब उसी प्रतिक्रिया महाराष्ट्र के कुछ भागों में हो रही है। यह मामला इतने सालों से पड़ा हुआ है। आखिर केन्द्र सरकार कोई निर्णय इसमें क्यों नहीं कर सकती? मैसूर में भी कांग्रेस की सरकार है, महाराष्ट्र में भी कांग्रेस की सरकार है। केन्द्र में प्रधान मंत्री सारी सत्ता अपने हाथ में केन्द्रित किये हुये हैं। यह सीमा विवाद कब तक लटका कर रखा जाय?

श्री मधु लिमये (वांका) : हम लोगों के भी काम रोको प्रस्ताव है। क्या र. ८५ को विघटन के रास्ते पर ले जाना चाहते हैं?

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : क्या दो प्रदेशों में लड़ाई कराने का इनका इरादा है?

श्री मधु लिमये : हमारे कामरोको प्रस्ताव पर तुरन्त बहस होनी चाहिये। सरकार की यह विफलता है राष्ट्र विघटन के कगार पर खड़ा है।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि आप केवल इस आधार पर हमारे कामरोको प्रस्ताव को